20 / 01 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

मन, बुद्धि, संस्कार के अधिकारी बन
वरदानी मूर्त होने का अनुभव

➢➢ मैं वरदानी स्वरुप आत्मा हूँ...

➳ _ ➳ भाग्य विधाता बाप ने अपना बनाकर

➳ _ ➳ श्रेष्ठ भाग्य का वरदान दिया...

→ 'तू मेरा है' यह कहकर बाबा ने पहला वरदान दिया..

→ सेकेण्ड में जन्म-जन्मान्तर के लिए

- वर्सें का अधिकारी बना दिया..

→ बिना किसी मेहनत के यह वरदान मिल गया..

→ मैं जो हूँ जैसी हूँ बाबा की हूँ..

- सदा इसी वरदान की स्मृति में रहती हूँ..
- और मेहनत से छूट गई हूँ..
  - कभी सोचा भी नहीं था की ऐसा भाग्य मिलेगा..

➳ _ ➳ वरदाता बाप की वरदानों की बारिश के नीचे बैठी मैं आत्मा..

→ एक-एक वरदान को स्वयं में समा रही हूँ..

→ अनुभव कर रही हूँ अपने सिर पर बाबा का वरदानी हाथ

- सर्व खजानों और वरदानों से
- स्वयं को सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ..

➳ _ ➳ अपने मन, बुद्धि और संस्कारों पर कंट्रोल कर रही हूँ...

→ श्रेष्ठ संकल्पों से अपने मन, बुद्धि को भर रही हूँ..

→ अन्य संकल्पों को सेकेण्ड में कन्ट्रोल कर रही हूँ..

→ सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सागर में लहरा रही हूँ..

→ जिस समय और जब चाहे शुद्ध संकल्पों के

→ सागर के तले में जाकर साइलेंस स्वरूप बन रही हूँ..

→ पावरफुल ब्रेक लगाने का अभ्यास कर-

- मन, बुद्धि और संस्कार
- तीनों ही शक्तियों पर अपना अधिकार कर रही हूँ..
  - महादानी, वरदानी स्वरुप बन रही हूँ..

➢➢ बाबा द्वारा रचे इस महायज्ञ में वरदानी मूर्त बन सेवा कर रही हूँ...

➳ _ ➳ स्वयं बाप की सदा बनकर

➳ _ ➳ औरों को भी बाप का सदा बना रही हूँ...

→ स्वयं सदा वरदानों से सम्पन्न रहती हूँ

- और दूसरों को दान कर रही हूँ..

→ स्वयं की शक्तियों और स्वयं के गुणों द्वारा

- निर्बल आत्माओं को बाप के समीप ला रही हूँ..

→ शुभ चिंतक बन श्रेष्ठ संकल्पों के द्वारा सेवा कर रही हूँ..

→ साधनों द्वारा सेवा के साथ-साथ सिद्धि स्वरूप बन

- साइलेन्स के स्वरूप की अनुभूति करा रही हूँ..
- हिम्मतहीन आत्माओं को हिम्मत की टांग दे रही हूँ..
- अपने वरदानों से हिम्मत और उल्लास में ला रही हूँ..

➳ _ ➳ सहयोग देकर सबको बाप के वर्से का अधिकारी बना रही हूँ

→ चारों ओर शांति के वायब्रेशन्स फैला रही हूँ..

→ लाइट हाउस, माइट हाउस बन

- लाइट और माइट की किरणें फैला रही हूँ..

→ महादानी बन विश्व की आत्माओं में

- वाणी द्वारा हल चला रही हूँ..

→ वरदानी बन बीज डालकर

- उसको शीतलता के रूप से
- साइलेन्स की पावर से
  - शीतल जल डाल रही हूँ
  - और फल निकाल रही हूँ

→ सभी आत्माएं बाप के समीप आ रही है..

→ बाप के वर्से की अधिकारी बन रही हैं..

→ सभी मेरा शुक्रिया अदा कर रहे हैं..

- अपनी दुआओं से मेरी झोली भर रहे हैं..

→ चारों ओर हर ब्राह्मण आत्मा बाप-समान

- चैतन्य चित्र बन रहे हैं..
- लाइट और माइट हाउस की झाँकी बन रहे हैं..
- संकल्प शक्ति और साइलेन्स की शक्ति चारों और फैला रहे हैं..
- कर्मातीत स्टेज पर वरदानी मूर्त का पार्ट बजाकर
- सम्पूर्णता के समीप आ रहे हैं..